

**ओनत वि.** (तद्.) जो अवनत है, नत, झुका हुआ, विनम्र।

**ओना पुं.** (देश.) तालाब, झरना आदि से पानी निकालने का रास्ता या मार्ग।

**ओनाड़ वि.** (देश.) 1. बहादुर, बलशाली 2. जिसमें उद्वेगता भरी हो।

**ओनाना अ.क्रि.** (देश.) प्रवृत्त होना, किसी कार्य में लग जाना, ध्यान देना, कान लगाकर सुनना।

**ओनामासीधम स्त्री.** (तद्.) 1. विद्यारंभ करते समय बालकों के द्वारा किया जाने वाले मंगलाचरण 'ओम् नमःशिवाय' का भ्रष्ट रूप, सिद्धियों को प्रणाम 2. किसी कार्य का शुभारंभ 3. विद्यारंभ।

**ओप स्त्री.** (देश.) चमक, दीप्ति, शोभा।

**ओपची पुं.** (देश.) चमकदार कवच या शस्त्रधारण करने वाला योद्धा।

**ओपना स.क्रि.** (देश.) ओप या शोभा से युक्त करना, चमकाना **अ.क्रि.** चमकना पुं. चमकाने के पत्थर का वह टुकड़ा जिससे तलवार आदि को माँजा/चमकाया जाए।

**ओपनी स्त्री.** (देश.) दे. 'ओप' वि. चमकीली, शोभा, कांति से युक्त।

**ओपल पुं.** (तद्.) दूधिया पत्थर जिसका रंग विल्लौर जैसा होता है और रंग बदलता है opal

**ओपित वि.** (देश.) ओपयुक्त, चमकता हुआ।

**ओपी वि.** (देश.) जो चमक रहा हो, चमकीला, शोभायमान।

**ओपेरा पुं.** (अं.) संगीतमय नाट्य रूप, संगीतिका।

**ओफ अव्य.** (अर. > उफ) पीड़ा और आश्चर्यजनक शब्द, उफ।

**ओबरी स्त्री.** (देश.) घर का अंदरूनी भाग, कोठरी।

**ओम पुं.** (जर्मन) भौ. ओम के नाम पर नामित 'ओम' नामक विद्युत प्रतिरोध की मापक एक इकाई जो उस चालक के प्रतिरोध के तुल्य है जिसके सिरों पर एक वोल्ट का विभवांतर चालक में एक ऐम्पियर की धारा उत्पन्न करता है।

**ओम् पुं.** (तत्.) ओंकार, आदिनाद, ब्रह्म, सर्वव्याप्त ईश्वर का वाचक, प्रणव, कर्मकांड आदि के प्रारंभ में बोली जाने वाली पवित्र ध्वनि।

**ओरंग-ऊटंग पुं.** (मलेशि.) (ओरंग=मनुष्य, ऊटंग=वन) एक प्रकार का पुच्छहीन वानर या वनमानुष जो बोर्नियो और सुमात्रा में पाया जाता है।

**ओर स्त्री.** (तद्.) 1. किसी निश्चित स्थान के अतिरिक्त शेष दिशा-विस्तार, जिसे दाहिनी, बायीं, ऊपर, नीचे, पूर्व, पश्चिम आदि शब्दों से निश्चित करते हैं जैसे- पूर्व की ओर, उत्तर की ओर, आदि, तरफ, दिशा 2. पक्ष। पुं. (तद्.) अंत, सिरा, किनारा।

**ओराँव स्त्री.** (देश.) 1. एक पहाड़ी जनजाति का नाम जो झारखंड के छोटा नागपुर की पहाड़ियों में निवास करती है 2. इस जनजाति की बोली।

**ओरानाँ वि.** (तद्.) जो वस्तु समाप्त हो चुकी हो।

**ओराना अ.क्रि.** (तद्.) किनारे पर पहुँचना, खत्म होना, समाप्त करना।

**ओरि क्रि.वि.** (तद्.) आखिर तक, अंत समय तक।

**ओरिया स्त्री.** (तद्.) 1. कपड़ा बुनाई में ताना तानने के समय खूँटी के पास गाड़ी जाने वाली एक लकड़ी 2. वि. तरफवाला, पक्ष वाला।

**ओल स्त्री.** (तद्.) 1. गोद 2. आड़ 3. शरण, पनाह-(देना-लेना) 4. कंद प्रजाति की एक सब्जी, सूरन, जिमीकंद वि. गीला या आर्द्र।

**ओलक पुं.** (तद्.) पर्दा, ओट, आड़।